ग्रन्थमाला 'धार्मिक कृत्य' : देवतापूजन – खण्ड ६

आरती उतारने की शास्त्रोक्त पद्धति

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

एवं अन्य

सनातन संस्था

अब तक इस लघुग्रन्थ की १९,७०० प्रतियां प्रकाशित !

संक्षिप्त अनुक्रमणिका

- अध्याय १. आरती का महत्त्व १०
- अध्याय २. आरती कब करें ? १३
- अध्याय ३. आरती करनेका सम्पूर्ण कृत्य १६
- अध्याय ४. आरती के कृत्यों का आध्यात्मशास्त्र २१
- अध्याय ५. आरती के समय हुई कुछ अनुभूतियां ५९
- प्रस्तुत ग्रन्थ की असामान्यता समझ लें ! ६३
- संकलनकर्ताओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण ६५

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की उत्तराधिकारिणियों की उपाधि सम्बन्धी विवेचन !

जीवनाडी-पट्टिका वाचन द्वारा सप्तर्षि ने की आज्ञा के अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी को 'श्रीसत्शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी को 'श्रीचित्शक्ति' सम्बोधित किया जा रहा है।

भूमिका

उपासक के हृदय में स्थित भक्तिदीप को तेजोमय बनाने का एवं देवता से कृपाशीर्वाद ग्रहण करने का सुलभ शुभावसर है 'आरती' । सन्तों की संकल्पशक्ति द्वारा सिद्ध आरतियों को गाने से उपर्युक्त उद्देश्य निःसंशय सफल होते हैं; परन्तु यह तब सम्भव है जब आरतियां हृदय से, अर्थात आर्तभाव से, उत्कण्ठा से एवं अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण से उचित पद्धति से गाई जाएं।

कोई कृत्य हमसे आर्तता से अर्थात अन्तःकरण-पूर्वक तब होता है, जब उसका महत्त्व हमारे मन पर अंकित हो । उस विषय के अध्यात्मशास्त्रीय आधार अथवा सिद्धान्त को समझने पर उसका महत्त्व शीघ्र स्पष्ट होता है । इसी उद्देश्य से आरती के अन्तर्गत विविध कृत्यों का अध्यात्मशास्त्रीय आधार इस लघुग्रन्थ में दिया है । उपासना में कोई भी कृत्य अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाकर उचित पद्धति से करना अत्यावश्यक है; क्योंकि ऐसे कृत्य का ही परिपूर्ण फल मिलता है ।

वर्तमान दौड-भाग से भरा जीवन, उपलब्ध साधनसामग्री,

उसकी शुद्धता आदि बातों का ध्यान रखने पर सभी कर्मकाण्ड अनुसार १०० प्रतिशत आरती कर ही पाएंगे, ऐसा नहीं है । इसलिए सामान्य व्यक्ति अपने घर में 'साधना' स्वरूप कर पाए, ऐसे आरती से सम्बन्धित कुछ सरल कृत्य तथा उसका अध्यात्मशास्त्रीय आधार क्या है ?, यह इस लघुग्रन्थ में बताया है । उसी प्रकार देवता की आरती उनके अनाहतचक्र से अर्थात हृदयस्थल से आज्ञाचक्र तक उतारनी चाहिए, आरती के समय ताली धीमे से बजानी चाहिए एवं आरती के उपरान्त देवता की परिक्रमा अवश्य करनी चाहिए । ऐसे अनेक कृत्यों की हमें जानकारी नहीं होती अथवा हो, तो भी कृत्य उचित पद्धति से नहीं होते । इस लघुग्रन्थ से हमें यह ज्ञात होगा कि 'विभिन्न कृत्यों को उचित पद्धति से कैसे करना चाहिए तथा उसका अध्यात्मशास्त्रीय आधार क्या है ?'

श्री गुरुचरणों में प्रार्थना है कि इस लघुग्रन्थ में बताए शास्त्र को समझकर आरती करने से प्रत्येक व्यक्ति की अधिकाधिक भावजागृति हो । – **संकलनकर्ता**